चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अजीत समाचार	19.06.2021	--	--

उर्वरकों का अंधाधुंध उपयोग पर्यावरण व जीवों हेतु घातक : प्रो. काम्बोज

बैठक में उपस्थित विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफैसर बी.आर. काम्बोज व अन्य।

हिसार, 18 जून (देवानंद) : वर्तमान समय में उर्वरकों का अंधाधुंध प्रयोग पर्यावरण व जीवों के लिए खतरा पैदा कर रहा है, जो घातक है। किसान फसलों के अधिक उत्पादन के लिए लगातार रासायनिक उर्वरकों का असंतुलित मात्रा में अपने खेतों में प्रयोग कर रहे हैं जो संपूर्ण मानव जाति के अलावा पर्यावरण के लिए भी खतरनाक है। ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार के कुलपति प्रोफेसर बी.आर. काम्बोज ने कहे। वे विश्वविद्यालय में अंतरराष्ट्रीय उर्वरक दिवस पर आयोजित एक बैठक को संबोधित कर रहे थे। बैठक में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के मक्का उत्पादन केंद्र के पूर्व निदेशक डॉ. साईं दास व अंतरराष्ट्रीय उर्वरक विकास केंद्र के निदेशक डॉ. यशपाल सहरावत विशेष रूप से मौजूद रहे। कुलपति ने कहा कि किसान बिना वैज्ञानिक परामर्श के उर्वरकों का असंतुलित मात्रा में

अंतर्राष्ट्रीय उर्वरक दिवस बैठक आयोजित

अंधाधुंध प्रयोग कर रहे हैं, जो विश्वविद्यालय द्वारा सिफारिश की गई मात्रा से कई गुणा अधिक होता है। उर्वरकों की अधिक मात्रा में उपयोग से धान, गेहूं व कपास आदि फसलों के उत्पादन में बढ़ोतरी की बजाए स्थिर हो गई है। इनके अधिक उपयोग से भूमि के स्वास्थ्य व भूमिगत जल पर दुष्प्रभाव पड़ रहा है। इससे चर्मरोग, कैंसर, श्वास रोग जैसे अनेक रोग उत्पन्न हो रहे हैं जो घातक हैं। उन्होंने कहा कि उर्वरकों का अधिक प्रयोग धीरे-धीरे जमीन के अंदर समा जाते हैं और उनके दूरगामी दुष्प्रभाव सामने आते हैं। खाद्य श्रृंखला में भी रसायनिक तत्वों की मात्रा पाई गई है।

वैज्ञानिकों की सलाहनुसार करें उर्वरकों का प्रयोग : उन्होंने किसानों से आह्वान किया कि वे वैज्ञानिकों की सलाह अनुसार नाइट्रोजन, फास्फोरस व पोटाश की सिफारिश की गई मात्रा का ही प्रयोग किया जाना चाहिए, जबकि मौजूदा आंकड़ों के अनुसार इनका प्रयोग कई गुणा अधिक किया जा रहा है जो बहुत ही नुकसान दायक है। बैठक में कुलपति के ओएसडी डॉ. अतुल कुमार ढींगड़ा, अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत, विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. रामनिवास खांडा, मानव संसाधन निदेशक डॉ. एम.एस. सिद्धपुरिया, मृदा विज्ञान विभाग के अध्यक्ष डॉ. मनोज कुमार शर्मा आदि मौजूद रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सच कहूं	19.06.2021	--	--

उर्वरकों का अंधाधुंध प्रयोग पर्यावरण व जीवों के लिए घातक: प्रो. कंबोज

■ अंतरराष्ट्रीय उर्वरक दिवस पर विकास केंद्र के अधिकारियों के साथ किया मंथन

हिसार(सच कहूँ न्यूज)। वर्तमान समय में उर्वरकों का अंधाधुंध प्रयोग पर्यावरण व जीवों के लिए खतरा पैदा कर रहा है, जो घातक है। किसान फसलों के अधिक उत्पादन के लिए लगातार रासायनिक उर्वरकों का असंतुलित मात्रा में अपने खेतों में प्रयोग कर रहे हैं जो संपूर्ण मानव जाति के अलावा पर्यावरण के लिए भी खतरनाक है। ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार के कुलपति प्रोफेसर बी.आर. काम्बोज ने कहे। वे विश्वविद्यालय में अंतरराष्ट्रीय उर्वरक दिवस पर आयोजित एक बैठक को संबोधित कर रहे थे। बैठक में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के मक्का उत्पादन केंद्र के पूर्व निदेशक डॉ. सहाई दास व अंतरराष्ट्रीय उर्वरक विकास केंद्र के निदेशक डॉ. बशपाल सहारावत विशेष रूप से मौजूद रहे। कुलपति ने कहा कि किसान बिना वैज्ञानिक परामर्श के उर्वरकों का असंतुलित मात्रा में अंधाधुंध प्रयोग कर रहे हैं, जो विश्वविद्यालय द्वारा सिफारिश की गई मात्रा से कई गुणा अधिक होता है। उर्वरकों की अधिक मात्रा में उपयोग से धान, गेहूं व कपास आदि फसलों के उत्पादन में बढ़ोतरी की बजाए स्थिर हो गई है।इनके अधिक उपयोग से भूमि के स्वास्थ्य व भूमिगत जल पर दुष्प्रभाव पड़ रहा है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हिसार टूडे न्यूज	19.06.2021	--	--

उर्वरकों का अंधाधुंध प्रयोग पर्यावरण व जीवों के लिए घातक : प्रो. काम्बोज

टुडे न्यूज | हिसार

वैज्ञानिकों की सलाहनुसार करें उर्वरकों का प्रयोग

वर्तमान समय में उर्वरकों का अंधाधुंध प्रयोग पर्यावरण व जीवों के लिए खतरा पैदा कर रहा है, जो घातक है। किसान फसलों के अधिक उत्पादन के लिए लगातार रासायनिक उर्वरकों का असंतुलित मात्रा में अपने खेतों में प्रयोग कर रहे हैं जो संपूर्ण मानव जाति के अलावा पर्यावरण के लिए भी खतरनाक है। ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार के कुलपति प्रोफेसर बी.आर. काम्बोज ने कहे। वे विश्वविद्यालय में अंतरराष्ट्रीय उर्वरक दिवस पर आयोजित एक बैठक को संबोधित कर रहे थे। बैठक में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के मक्का उत्पादन केंद्र के पूर्व निदेशक डॉ. साईं दास व अंतराष्ट्रीय उर्वरक विकास केंद्र के निदेशक डॉ. यशपाल सहरावत विशेष रूप से मौजूद रहे। कुलपति ने कहा कि किसान बिना वैज्ञानिक परामर्श के उर्वरकों का असंतुलित मात्रा में अंधाधुंध प्रयोग कर रहे हैं, जो विश्वविद्यालय द्वारा सिफारिश की गई मात्रा से कई गुणा अधिक होता है।

उन्होंने किसानों से आह्वान किया कि वे वैज्ञानिकों की सलाह अनुसार नाइट्रोजन, फास्फोरस व पोटाश की सिफारिश की गई मात्रा का ही प्रयोग किया जाना चाहिए जबकि मौजूदा आंकड़ों के अनुसार इनका प्रयोग कई गुणा अधिक किया जा रहा है जो बहुत ही नुकसान दायक है। वैज्ञानिकों की सलाहनुसार बिना मिट्टी-पानी की जांच के असंतुलित मात्रा में केवल यूरिया व डीएपी के प्रयोग से जमीन में गौण तत्व जैसे कैल्शियम, मैग्नीशियम, सल्फर व सूक्ष्म पोषक तत्व जिंक, लौह, कॉपर, मैगनीज, बोरोन आदि की कमी हो रही है। उन्होंने किसानों से आह्वान किया कि वे रसायनिक उर्वरकों का कम से कम प्रयोग करें और वैज्ञानिकों की सलाह अनुसार मिट्टी की जांच के आधार पर प्रयोग करें, जो न केवल पर्यावरण बल्कि जीव-जंतुओं के लिए भी फायदेमंद होगा। अंतराष्ट्रीय उर्वरक विकास केंद्र के निदेशक डॉ. यशपाल सहरावत ने बताया कि विश्व स्तर पर कई ऐसी तकनीक है जो रसायनिक उर्वरकों के प्रयोग को कम करने में सहायक हैं। इन्हें जल्द ही विश्वविद्यालय के सहयोग से अपनाने का प्रयास किया जाएगा। भविष्य में एचएयू व अंतराष्ट्रीय उर्वरक विकास केंद्र संयुक्त रूप से मिलकर रसायनिक उर्वरकों के प्रयोग को कम करने के लिए काम करेंगे। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के मक्का उत्पादन केंद्र के पूर्व निदेशक डॉ. साईं दास ने विश्वविद्यालय की ओर से इस क्षेत्र में सहयोग करने के लिए प्रसन्नता जाहिर की। बैठक में कुलपति के ओएसडी डॉ. अतुल कुमार ढींगड़ा, अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत, विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. रामनिवास ढांडा, मानव संसाधन निदेशक डॉ. एम.एस. सिद्धपुरिया, मृदा विज्ञान विभाग के अध्यक्ष डॉ. मनोज कुमार शर्मा आदि मौजूद रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
एचआर ब्रेकिंग	19.06.2021	--	--

उर्वरकों का अंधाधुंध प्रयोग पर्यावरण व जीवों के लिए घातक : प्रोफेसर बी.आर. काम्बोज

अंतरराष्ट्रीय उर्वरक दिवस पर अंतराष्ट्रीय उर्वरक विकास केंद्र के अधिकारियों के साथ बैठक आयोजित

एचआर ब्रेकिंग न्यूज

बैठक में दौरान मौजूद विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर बी.आर. काम्बोज व अन्य।

हिसार। वर्तमान समय में उर्वरकों का अंधाधुंध प्रयोग पर्यावरण व जीवों के लिए खतरा पैदा कर रहा है, जो घातक है। किसान फसलों के अधिक उत्पादन के लिए लगातार रासायनिक उर्वरकों का असंतुलित मात्रा में अपने खेतों में प्रयोग कर रहे हैं जो संपूर्ण मानव जाति के अलावा पर्यावरण के लिए भी खतरनाक है। ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार के कुलपति प्रोफेसर बी.आर. काम्बोज ने कहे। वे विश्वविद्यालय में अंतराष्ट्रीय उर्वरक दिवस पर आयोजित एक बैठक को संबोधित कर रहे थे। बैठक में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के मक्का उत्पादन केंद्र के पूर्व निदेशक डॉ. साईं दास व अंतराष्ट्रीय उर्वरक विकास केंद्र के निदेशक डॉ. मदनपाल महाराज विशेष रूप से मौजूद रहे। कुलपति ने कहा कि किसान बिना वैज्ञानिक परामर्श के उर्वरकों का असंतुलित मात्रा में अंधाधुंध प्रयोग कर रहे हैं, जो विश्वविद्यालय द्वारा सिफारिश की गई मात्रा से कई गुणा अधिक होता है। उर्वरकों की अधिक मात्रा में उपयोग से धान, गेहूं व कपास आदि फसलों के उत्पादन में बढ़ोतरी की बजाए स्थिर हो गई है। इनके अधिक उपयोग से भूमि के स्वास्थ्य व भूमिगत जल पर दुष्प्रभाव पड़ रहा है। इनसे कैंसर, श्वास रोग जैसे अनेक रोग उत्पन्न हो रहे हैं जो घातक है। उन्होंने कहा कि उर्वरकों का अधिक प्रयोग धीरे-धीरे जमीन के अंदर जमा जाते हैं और उनके दूरगामी दुष्प्रभाव सामने आते हैं। खाद्य शृंखला में भी रासायनिक तत्वों की मात्रा पाई गई है।

वैज्ञानिकों की सलाहनुसार करें उर्वरकों का प्रयोग

उन्होंने किसानों से आह्वान किया कि वे वैज्ञानिकों की सलाह अनुसार आइटेरफर, माइक्रोएन व योजना की सिफारिश की गई मात्रा का ही प्रयोग किया जाना चाहिए, जबकि मौजूदा आवश्यकता के अनुसार इनका प्रयोग कई गुणा अधिक किया जा रहा है जो बहुत ही नुकसान दायक है। वैज्ञानिकों की सलाहनुसार बिना मिट्टी-पानी की जांच के असंतुलित मात्रा में केवल यूरिया व डीएपी के प्रयोग से जमीन में दीर्घ तत्व जैसे कैल्शियम, मैग्नीशियम, सल्फर व सूक्ष्म पोषक तत्व जिंक, लोहा, बोरोन, मैंगनीज आदि की कमी हो रही है। उन्होंने किसानों से आह्वान किया कि वे रासायनिक उर्वरकों का कम से कम प्रयोग करें और वैज्ञानिकों की सलाह अनुसार मिट्टी की जांच के आधार पर प्रयोग करें, जो न केवल पर्यावरण बल्कि जीव-जंतुओं के लिए भी लाभदायक होगा। अंतराष्ट्रीय उर्वरक विकास केंद्र के निदेशक डॉ. मदनपाल महाराज ने बताया कि विश्व भर का कई ऐसी तकनीक है जो रासायनिक उर्वरकों के प्रयोग को कम करने में सहायक हैं। इन्हें जल्द ही विश्वविद्यालय के सहयोग से अपनाने का प्रयास किया जाएगा। भविष्य में एचएयू व अंतराष्ट्रीय उर्वरक विकास केंद्र संयुक्त रूप से मिलकर रासायनिक उर्वरकों के प्रयोग को कम करने के लिए काम करेंगे। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के मक्का उत्पादन केंद्र के पूर्व निदेशक डॉ. साईं दास ने विश्वविद्यालय की ओर से इस क्षेत्र में सहयोग करने के लिए आभार व्यक्त की। बैठक में कुलपति के ओएसडी डॉ. अतुल कुमार ढींगड़ा, अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत, विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. रामनिवास ढांडा, मानव संसाधन निदेशक डॉ. एम.एस. सिद्धपुरिया, मृदा विज्ञान विभाग के अध्यक्ष डॉ. मनोज कुमार शर्मा आदि मौजूद रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हड़ौती अधिकार	18.06.2021	--	--

हाड़ौती अधिकार

फरीदाबाद शुक्रवार, 18 जून, 2021

जल की बूंद-बूंद को बचाना होगा : डा. रामनिवास

खेती में जल संरक्षण विषय पर ब्लॉक स्तरीय वर्चुअल किसान गोष्ठी आयोजित

गुलाब सिंह / अधिकार संवाददाता

फरीदाबाद, 17 जून। आज कृषि विज्ञान केंद्र भोपानी द्वारा खेती में जल संरक्षण विषय पर ब्लॉक स्तरीय किसान गोष्ठी का वर्चुअल रूप से आयोजन किया गया।

केंद्र के वरिष्ठ समन्वयक डॉ विजयपाल यादव ने इस गोष्ठी में विशेष तौर पर आयोजित मुख्य अतिथि के रूप में जुड़े चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ रामनिवास तथा भाग ले रहे किसानों, महिलाओं, नवयुवकोंव जिले के कृषि व बागवानी विभाग के अधिकारीगणों व विस्तार कार्यकर्ताओं का स्वागत करते हुए खेती में जल संरक्षण की महत्ता तथा जल संरक्षण को लेकर बनायी गयी अनेक प्रकार की योजनाएं को अमल में लाने का आह्वान किया।

विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ रामनिवास ने किसानों को सचेत किया कि जलवायु परिवर्तन के कारण वर्तमान में जल संकट बहुत गहरा गया है। आज कल के हालात को देखते हुए पानी की विकट समस्या आने वाले दिनों में होने की आशंका है इसलिए हमें जल को संरक्षित करने एवं बूंद-बूंद को बचाने का प्रयास करना चाहिए। जल संरक्षण करना आम नागरिक का कर्तव्य है। जल संरक्षण के लिए के वी के वैज्ञानिकों द्वारा गांव गांव तक किसानों में जागरूकता फैलाये। उन्होंने किसानों से आह्वान किया कि वे खेती में जल संरक्षण की तकनीकों विशेष तौर पर धान में सीधी बीजाई, ड्रिप व फव्वारा सिंचाई, लेजर लेवलर द्वारा खेतों के समतलीकरण आदि को अपनाकर कृषि में जल के दुरुपयोग को रोक जा सकता है। कम पानी से उगाई जाने वाली फसलों को अपनाने पर बल दिया।

कार्यक्रम में चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसारसे जुड़े मुख्य विशेषज्ञ सस्यविज्ञान विभाग के पूर्व अध्यक्ष डॉ एस एस पूनिया ने फसलों में जल संरक्षण सम्बन्धी अनेक तकनीकों जैसेधान की सीधी बीजाई, जीरो टिल तकनीकसे गेहूं की बीजाई, खेतों को लेजर लेवलर तकनीक द्वारा समतल बनाना, फसलों में मल्चिंग का प्रयोग, सूखे को सहन करने वाली फसलों की किस्मों को लगाना आदि अनेक तकनीकों पर विस्तारपूर्वक जानकारी दी तथा कहा कि किसान भाई इन तकनीकों को अपनाकर खेती में प्रयोग होने वाले पानी को बचाकर सकते हैं।

बागवानी विभाग फरीदाबाद के बागवानी विकास अधिकारी डॉ सुरेशचंद ने बागवानी एवं सब्जी फसलों में टपका सिंचाई तकनीकों के बारे में विस्तार से जानकारी दी।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हिंदुस्तान समाचार	18.06.2021	--	--

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सिटी पल्स न्यूज	18.06.2021	--	--

बैठक अंतर्राष्ट्रीय उर्वरक विकास केंद्र के अधिकारियों के साथ बैठक आयोजित

उर्वरकों का अंधाधुंध प्रयोग पर्यावरण व जीवों के लिए घातक : प्रोफेसर काम्बोज

हिसार। बैठक में दौरान मौजूद विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर बी.आर. काम्बोज व अन्य।

सिटी पल्स न्यूज, हिसार। वर्तमान समय में उर्वरकों का अंधाधुंध प्रयोग पर्यावरण व जीवों के लिए खतरा पैदा कर रहा है, जो घातक है। किसान फसलों के अधिक उत्पादन के लिए लगातार रासायनिक उर्वरकों का असंतुलित मात्रा में अपने खेतों में प्रयोग कर रहे हैं जो संपूर्ण मानव जाति के अलावा पर्यावरण के लिए भी खतरनाक है। ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार के कुलपति प्रोफेसर बी.आर. काम्बोज ने कहे। वे विश्वविद्यालय में अंतर्राष्ट्रीय उर्वरक दिवस पर आयोजित एक बैठक को संबोधित कर रहे थे। बैठक में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के मक्का उत्पादन केंद्र के पूर्व निदेशक डॉ. साईं दास व अंतर्राष्ट्रीय उर्वरक विकास केंद्र के निदेशक डॉ. यशपाल सहरावत विशेष रूप से मौजूद रहे। कुलपति ने कहा कि किसान बिना वैज्ञानिक परामर्श के उर्वरकों का असंतुलित मात्रा में अंधाधुंध प्रयोग कर रहे हैं, जो विश्वविद्यालय द्वारा सिफारिश की गई मात्रा से कई गुणा अधिक होता है। उर्वरकों की अधिक मात्रा में उपयोग से धान, गेहूं व कपास आदि फसलों के उत्पादन में बढ़ोतरी की बजाए स्थिर हो गई है। इनके अधिक उपयोग से भूमि के स्वास्थ्य व भूमिगत जल पर दुष्प्रभाव पड़ रहा है। बैठक में कुलपति के ओएसडी डॉ. अतुल कुमार ढींगड़ा, अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत, विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. रामनिवास ढांडा, मानव संसाधन निदेशक डॉ. एम.एस. सिद्धपुरिया, मृदा विज्ञान विभाग के अध्यक्ष डॉ. मनोज कुमार शर्मा आदि मौजूद रहे।

वैज्ञानिकों की सलाहनुसार करें उर्वरकों का प्रयोग

उन्होंने किसानों से आह्वान किया कि वे वैज्ञानिकों की सलाह अनुसार नाइट्रोजन, फास्फोरस व पोटाश की सिफारिश की गई मात्रा का ही प्रयोग किया जाना चाहिए। वैज्ञानिकों की सलाहनुसार बिना मिट्टी-पानी की जांच के असंतुलित मात्रा में केवल यूरिया व डीएपी के प्रयोग से जमीन में गौण तत्व जैसे कैल्शियम, मैग्नीशियम, सल्फर व सूक्ष्म पोषक तत्व जिंक, लौह, कॉपर, मैंगनीज, बोरोन आदि की कमी हो रही है। उन्होंने किसानों से आह्वान किया कि वे रासायनिक उर्वरकों का कम से कम प्रयोग करें और वैज्ञानिकों की सलाह अनुसार मिट्टी की जांच के आधार पर प्रयोग करें, जो न केवल पर्यावरण बल्कि जीव-जंतुओं के लिए भी फायदेमंद होगा। अंतर्राष्ट्रीय उर्वरक विकास केंद्र के निदेशक डॉ. यशपाल सहरावत ने बताया कि विश्व स्तर पर कई ऐसी तकनीक है जो रासायनिक उर्वरकों के प्रयोग को कम करने में सहायक है। इन्हें जल्द ही विश्वविद्यालय के सहयोग से अपनाने का प्रयास किया जाएगा।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अमर उजाला	18-6-2021	03	3-4

ऑनलाइन कार्यक्रम में बोलते एचएयू के कुलपति प्रो. बीआर कांबोज।

उर्वरकों का अंधाधुंध प्रयोग पर्यावरण और जीवों के लिए घातक : प्रो. कांबोज

माई सिटी रिपोर्टर

हिसार। वर्तमान समय में उर्वरकों का अंधाधुंध प्रयोग पर्यावरण व जीवों के लिए खतरा पैदा कर रहा है, जो घातक है। किसान फसलों के अधिक उत्पादन के लिए लगातार रासायनिक उर्वरकों का असंतुलित मात्रा में अपने खेतों में प्रयोग कर रहे हैं, जो संपूर्ण मानव जाति के अलावा पर्यावरण के लिए भी खतरनाक है।

यह कहना है चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर कांबोज का। वे विश्वविद्यालय में अंतरराष्ट्रीय उर्वरक दिवस पर आयोजित एक बैठक को संबोधित कर रहे थे। बैठक में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के मक्का उत्पादन केंद्र के पूर्व निदेशक डॉ. सांई दास व अंतरराष्ट्रीय उर्वरक विकास केंद्र के निदेशक डॉ. यशपाल सहरावत विशेष रूप से मौजूद रहे। अंतरराष्ट्रीय उर्वरक विकास केंद्र के निदेशक डॉ. यशपाल सहरावत ने बताया कि विश्व स्तर पर कई ऐसी तकनीक है जो रसायनिक उर्वरकों के प्रयोग को कम करने में सहायक हैं। इन्हें जल्द ही विश्वविद्यालय के सहयोग से अपनाने का प्रयास किया जाएगा। वक्ताओं ने कहा कि आज जरूरत है कि किसानों को जागरूक करें कि वे उर्वरकों का प्रयोग न करें। ये जमीन और स्वास्थ्य दोनों के लिए घातक है। बैठक में कुलपति के ओएसडी डॉ. अतुल कुमार ढींगड़ा, अनुसंधान निदेशक डॉ. एसके सहरावत, विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. रामनिवास ढांडा, मानव संसाधन निदेशक डॉ. एमएस सिद्धपुरिया, मृदा विज्ञान विभाग के अध्यक्ष डॉ. मनोज शर्मा मौजूद रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भास्कर	18-6-2021	02	7

वीसी बोले- उर्वरकों का अंधाधुंध प्रयोग पर्यावरण व जीवों के लिए घातक है

भास्कर न्यूज | हिसार

वर्तमान समय में उर्वरकों का अंधाधुंध प्रयोग पर्यावरण व जीवों के लिए खतरा पैदा कर रहा है, जो घातक है। किसान फसलों के अधिक उत्पादन के लिए लगातार रासायनिक उर्वरकों का असंतुलित मात्रा में अपने खेतों में प्रयोग कर रहे हैं जो संपूर्ण मानव जाति के अलावा पर्यावरण के लिए भी खतरनाक है। ये विचार एचएयू कुलपति प्रोफेसर बीआर काम्बोज ने व्यक्त किए।

वे विश्वविद्यालय में अंतरराष्ट्रीय उर्वरक दिवस पर आयोजित बैठक को संबोधित कर रहे थे। बैठक में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के मक्का उत्पादन केंद्र के पूर्व निदेशक डॉ. सांई दास व अंतरराष्ट्रीय उर्वरक विकास केंद्र के निदेशक डॉ. यशपाल सहरावत विशेष रूप से मौजूद रहे। कुलपति ने कहा कि किसान बिना वैज्ञानिक परामर्श के उर्वरकों का असंतुलित मात्रा में अंधाधुंध प्रयोग कर रहे हैं, जो विश्वविद्यालय द्वारा सिफारिश की गई मात्रा से कई गुणा अधिक होता है। उर्वरकों की अधिक मात्रा में उपयोग से धान, गेहूं व कपास आदि फसलों के उत्पादन में बढ़ोतरी की बजाए स्थिर हो गई है। इनके अधिक उपयोग से भूमि के स्वास्थ्य व भूमिगत जल पर दुष्प्रभाव पड़ रहा है। इससे चर्मरोग, कैंसर, श्वास रोग जैसे अनेक रोग उत्पन्न हो रहे हैं जो घातक है। बैठक में डॉ. अतुल कुमार ढींगड़ा, डॉ. एसके सहरावत, विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. रामनिवास ढांडा, मानव संसाधन निदेशक डॉ. एमएस सिद्धपुरिया, मृदा विज्ञान विभाग के अध्यक्ष डॉ. मनोज कुमार शर्मा आदि मौजूद रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पंजाब केसरी	18-6-2021	02	1 से 3

'उर्वरकों का अंधाधुंध प्रयोग पर्यावरण व जीवों के लिए घातक: प्रो. काम्बोज'

अंतरराष्ट्रीय उर्वरक दिवस पर अंतराष्ट्रीय उर्वरक विकास केंद्र के अधिकारियों के साथ बैठक आयोजित

बैठक में दौरान मौजूद विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर बी.आर. काम्बोज व अन्य।

हिसार, 18 जून (पंकेस): वर्तमान समय में उर्वरकों का अंधाधुंध प्रयोग पर्यावरण व जीवों के लिए खतरा पैदा कर रहा है, जो घातक है। किसान फसलों के अधिक उत्पादन के लिए लगातार रासायनिक उर्वरकों का असंतुलित मात्रा में अपने खेतों में प्रयोग कर रहे हैं जो संपूर्ण मानव जाति के अलावा पर्यावरण के लिए भी खतरनाक है। ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कहे।

वे विश्वविद्यालय में अंतरराष्ट्रीय उर्वरक दिवस पर आयोजित एक बैठक को संबोधित कर रहे थे। बैठक में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के मक्का उत्पादन केंद्र के पूर्व निदेशक डॉ. सांई दास व अंतराष्ट्रीय उर्वरक विकास केंद्र के निदेशक डॉ. यशपाल सहरावत विशेष रूप से मौजूद रहे। कुलपति ने कहा कि किसान बिना वैज्ञानिक परामर्श के उर्वरकों का असंतुलित मात्रा में अंधाधुंध प्रयोग कर रहे है, जो विश्वविद्यालय द्वारा सिफारिश की गई मात्रा से कई गुणा अधिक होता है। उर्वरकों की अधिक मात्रा में उपयोग से धान, गेहूं व कपास आदि फसलों के उत्पादन में बढ़ौतरी की बजाय स्थिर हो गई है। इनके अधिक उपयोग से भूमि के स्वास्थ्य व भूमिगत जल पर दुष्प्रभाव पड़ रहा है। इससे चर्मरोग, कैंसर, श्वास रोग जैसे अनेक रोग उत्पन्न हो रहे हैं जो घातक हैं। उन्होंने कहा कि उर्वरकों का अधिक प्रयोग धीरे-धीरे जमीन के अंदर समा जाते हैं और उनके दूरगामी दुष्प्रभाव सामने आते हैं। खाद्य श्रृंखला में भी रसायनिक तत्वों की मात्रा पाई गई है। उन्होंने किसानों से आह्वान किया कि वे वैज्ञानिकों की सलाह अनुसार नाइट्रोजन, फास्फोरस व पोटाश की सिफारिश की गई मात्रा का ही प्रयोग किया जाना चाहिए जबकि मौजूदा आंकड़ों के अनुसार इनका प्रयोग कई गुणा अधिक किया जा रहा है जो बहुत ही नुकसान दायक है। बैठक में कुलपति के ओ.एस.डी. डॉ. अतुल कुमार ढींगड़ा, अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत, विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. रामनिवास ढांडा, मानव संसाधन निदेशक डॉ. एम.एस. सिद्धपुरिया, मृदा विज्ञान विभाग के अध्यक्ष डॉ. मनोज कुमार शर्मा आदि मौजूद रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पल पल न्यूज	18.06.2021	--	--

उर्वरकों का अंधाधुंध प्रयोग पर्यावरण व जीवों के लिए घातक: प्रो. काम्बोज

पल पल न्यूज़: हिसार, 18 जून। वर्तमान समय में उर्वरकों का अंधाधुंध प्रयोग पर्यावरण व जीवों के लिए खतरा पैदा कर रहा है, जो घातक है। किसान फसलों के अधिक उत्पादन के लिए लगातार रासायनिक उर्वरकों का असंतुलित मात्रा में अपने खेतों में प्रयोग कर रहे हैं जो मानव शरीर के अलावा पर्यावरण के लिए भी नुकसानदायक है। ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार के कुलपति प्रोफेसर बी.आर. काम्बोज ने कहे। वे विश्वविद्यालय में अंतरराष्ट्रीय उर्वरक दिवस पर आयोजित एक बैठक को संबोधित कर रहे थे। बैठक में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के मक्का अनुसंधान केंद्र के पूर्व निदेशक डॉ. साई दास व अंतरराष्ट्रीय उर्वरक विकास केंद्र के निदेशक डॉ. [illegible] महाजन विशेष रूप से मौजूद रहे। कुलपति ने कहा कि किसान बिना वैज्ञानिक परामर्श के उर्वरकों का असंतुलित मात्रा में अंधाधुंध प्रयोग कर रहे हैं, जो विश्वविद्यालय द्वारा सिफारिश की गई मात्रा से कई गुणा अधिक होता है। उर्वरकों की अधिक मात्रा में प्रयोग से धान, गेहूं व कपास आदि फसलों के उत्पादन में पैदावार की रफ्तार स्थिर हो गई है। इनके अधिक उपयोग से भूमि के स्वास्थ्य व भूमिगत जल पर दुष्प्रभाव पड़ रहा है। इससे कैंसर, किडनी, श्वास रोग जैसे अनेक रोग उत्पन्न हो रहे हैं जो घातक हैं। उन्होंने कहा कि उर्वरकों का अधिक प्रयोग धीरे-धीरे जमीन के अंदर जमा होते हैं और इनके दूरगामी दुष्प्रभाव सामने आते हैं।